



DR. JANUM SINGH SOY

Dr. Janum Singh Soy is a retired University Prof., Head of Hindi Department, Kolhan University, Chaibasa, Jharkhand by profession and novelist, poet, author, editor, by passion in Ho language and literature.

2. Born on 8th August, 1950, Dr. Soy belonging to Ho scheduled Tribe, received his Bachelor of Arts degree (Hindi hons.) from Tata College Chaibasa, Ranchi University in 1971 and Masters of Arts degree from Ranchi University in 1974. He was appointed against first sanctioned post of the Hindi Department at Ghatsila College, Ghatsila in the year 1977. He served the Institution also as a BURSAR. In year 1991, he completed his Ph.d in Ho language and documented thesis named as “Ho Lok Geet Ka Sahityak Aur Sanskritik Aadhyan”. He is also the member of Tribal Regional Language (TRL) department as an expert in Kolhan University.

3. Dr. Soy contributed almost 40 years in the field of Ho literature. The Book 'Baha Sagen' (part-1) was published in 2009 which is the very first poetry which introduced as a 'Author'. In the same year 2009, A Ho Novel was launched in the name of 'Ho Kudi' which proved to be one of the huge achievements for him and Ho society too as it is only novel in Ho literature. This novel is scripted in 'Devnagri' and the language is 'Ho'. 'Ho Kudi' is also the part of JPSC syllabus since 2009 till date including Kolhan University syllabus. His third book named as 'Baha Sagen' (part-2) was released in 2010. The fourth book, Tiara Sagen (part 7) was released in 2012 and then the fifth book 'Hara Sagen' (part 1) was released in 2013. Adding to it, these books are also the part of Kolhan University syllabus. As 'Editor', he published book 'Aadhunik Ho Shist Kavya' in 2013. Many of his books are ready to launch and some of them are in process.

4. Dr. Soy is the recipient of numerous awards and honours. He received “Samman Patra” in 2009 by Birsa Adivasi Sanskriti Kala Academy, Jamshedpur. In 2012, Jann Madhyam Ranchi awarded him with “Prashasti Patra” for the best novel - 'Ho Kudi'. In 2014, Birsa Memorial Society, Jamshedpur presented him “Maan Patra” with the title Kol Guru Lako Bodra Award. Aadivaasi Ho Samaaj Mahasabha and Adivasi Ho Yuva Mahasabha, Chaibasa awarded him with “Sarwakallik Lekhan” in 2018. In 2019, he received “Samaan Patra” by the then Governor Smt. Draupadi Murmu in Ranchi. Adivasi Ho Samaj Mahasabha awarded for providing remarkable contribution in the field of Ho literature titled with “Lifetime achievement award” in 2021. All India Radio, Aakashwani Doordarshan, Ranchi invited him four times for discussing upon various topics which includes Ho society and culture.



डॉ. जानुम सिंह सोय

डॉ. जानुम सिंह सोय पेशे से कोल्हान विश्वविद्यालय, चाईबासा, झारखंड के हिंदी विभाग के सेवानिवृत्त प्रोफेसर हैं और शौकिया तौर पर हो भाषा व साहित्य उपन्यासकार, कवि, लेखक, संपादक हैं।

2. 8 अगस्त, 1950 को जन्मे, हो अनुसूचित जनजाति के डॉ. सोय ने 1971 में टाटा कॉलेज, चाईबासा, रांची विश्वविद्यालय से कला स्नातक (हिंदी ऑनर्स) और 1974 में रांची विश्वविद्यालय से स्नातकोत्तर की उपाधि प्राप्त की। साल 1977 में उन्हें घाटशिला कॉलेज, घाटशिला में हिंदी विभाग के पहले स्वीकृत पद पर नियुक्त किया गया था। उन्होंने इस संस्थान में बरसर के रूप में भी काम किया। 1991 में, उन्होंने हो भाषा में अपनी पीएचडी पूरी की और "हो लोक गीत का साहित्यिक और सांस्कृतिक अध्ययन" थीसिस संपन्न की। वह कोल्हान विश्वविद्यालय में एक विशेषज्ञ के रूप में जनजातीय क्षेत्रीय भाषा (टीआरएल) विभाग के सदस्य भी हैं।

3. डॉ. सोय ने लगभग 40 सालों तक हो साहित्य के क्षेत्र में योगदान दिया। 2009 में 'बहा सगेन' पुस्तक (भाग -1) प्रकाशित हुई जो कविता की पहली किताब थी जिसने उन्हें 'लेखक' के रूप में पेश किया। उसी साल 2009 में 'हो कुड़ी' के नाम से एक हो उपन्यास की शुरुआत हुई जो उनके और साथ-साथ हो समाज के लिए एक बड़ी उपलब्धि साबित हुई क्योंकि यह हो साहित्य का इकलौता उपन्यास है। यह उपन्यास 'देवनागरी' में लिखा गया है जिसकी भाषा 'हो' है। होकुड़ी 2009 से आज तक कोल्हान यूनिवर्सिटी के सिलेबस सहित जेपीएससी पाठ्यक्रम का हिस्सा भी है। उनकी तीसरी पुस्तक 'बहा सगेन' (भाग -2) के नाम से 2010 में आई। चौथी पुस्तक, टियारा सागेन (भाग 7) 2012 में आई और फिर पांचवीं किताब 'हारा सगेन' (भाग -1) 2013 में रिलीज हुई। इसके अलावा, ये किताबें कोल्हान यूनिवर्सिटी के सिलेबस का भी हिस्सा हैं। 'संपादक' के रूप में, उन्होंने 2013 में 'आधुनिक हो शिस्ट काव्य' पुस्तक प्रकाशित की। उनकी कई पुस्तकें लॉन्च के लिए तैयार हैं और उनमें से कुछ इस प्रक्रिया में हैं।

4. डॉ. सोय को अनेक पुरस्कार और सम्मान मिल चुके हैं। उन्हें 2009 में बिरसा आदिवासी संस्कृति कला अकादमी, जमशेदपुर द्वारा "सम्मान पत्र" प्राप्त हुआ। 2012 में, जन माध्यम रांची ने उन्हें सर्वश्रेष्ठ उपन्यास - 'हो कुड़ी' के लिए "प्रशस्ति पत्र" से सम्मानित किया। 2014 में, बिरसा मेमोरियल सोसाइटी, जमशेदपुर ने उन्हें कोल गुरु लको बोदरा पुरस्कार शीर्षक के साथ "मान पत्र" प्रदान किया। आदिवासी हो समाज महासभा और आदिवासी हो युवा महासभा, चाईबासा ने 2018 में उन्हें "सर्वकालिक लेखन" से सम्मानित किया। 2019 में, उन्हें रांची में तत्कालीन राज्यपाल श्रीमती द्रौपदी मुर्मु से "सम्मान पत्र" प्राप्त हुआ। हो साहित्य के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए आदिवासी हो समाज महासभा ने 2021 में उन्हें "लाइफटाइम अचीवमेंट अवार्ड" से सम्मानित किया। ऑल इंडिया रेडियो, आकाशवाणी, दूरदर्शन, रांची ने हो समाज और संस्कृति सहित विभिन्न विषयों पर चर्चा के लिए उन्हें चार बार आमंत्रित किया।